ISSN 2231-5187

# सा खी 39

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक
Post Off. Regd. No-G-2/VSI (E)-015/2021-22

## उत्तर सत्य और साहित्य

सम्पादक: सदानन्द शाही

अंक : 39
मास : अक्टूबर 2023–जनवरी 2024

ISSN : 2231-5187

# पाखी

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

**संस्थापक** : केदारनाथ सिंह

**सम्पादक** : सदानन्द शाही

www.premchandsahityasansthan.com

**संस्थापक :** केदारनाथ सिंह

**सम्पादक मण्डल :** अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह/मधु सिंह
**सम्पादक :** सदानन्द शाही

**प्रतिनिधि :** भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 **(गोरखपुर)**
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 **(आगरा)**
कमल कुमार, मो. 7003022681 **(कोलकाता)**
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 **(इलाहाबाद)**
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 **(गाजीपुर)**
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 **(बिलासपुर)**
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 **(जयपुर)**
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 **(गया)**

**आवरण चित्र :** लतिका कट्ट

**सज्जा :** राहुल कुमार शॉ

**अक्षर संयोजन :** श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी

**मुद्रक :** मित्तल आफसेट, वाराणसी

Saakhee Traimasik

UPI ID: saakhee2000@okhdfcbank

Scan to pay with any UPI app

**सहयोग राशि**

| | | |
|---|---|---|
| यह अंक | : | **सौ रुपये मात्र** |
| सदस्यता | : | **तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन – पाँच हजार रुपये मात्र** |
| संस्थाओं के लिए | : | **आठ सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन – दस हजार रुपये मात्र** |
| विदेश के लिए | : | **चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन – पाँच सौ डालर मात्र** |

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARB0LANKAX (0 as Zero)** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

**सम्पादकीय सम्पर्क**
क
बी-2, सत्येन्द्र गुप्त नगर, लंका
वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 7275466771, 9616393771

**ईमेल**
saakhee2000@gmail.com
**वेबसाइट**
www.premchandsahityasansthan.com

(वाद क्षेत्र : वाराणसी न्यायालय)

**(राजेश कुमार मल्ल, सचिव-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. द्वारा प्रकाशित)**
**www.notnul.com** पर सभी अंक उपलब्ध

# इस अंक में


**सम्पादकीय**

सोने के पात्र से सत्य का मुँह ढका हुआ है — सदानन्द शाही — 05

सत्य और काव्य-सत्य — पी. एन. सिंह — 09

**परिचर्चा :** उत्तर सत्य और साहित्य — प्रस्तुति—अंशु प्रिया

सत्य से परे रखने की साजिश—हितेन्द्र पटेल — 16

सत्य को छिपाने, दबाने या पलट देने की कोशिश—प्रीति चौधरी — 18

यहाँ सटीक जानकारी और दुष्प्रचार में अन्तर मुश्किल—विवेक सिंह — 21

**विशेष**

अक्षमितों का साहित्य — सितांशु यशश्चंद्र — 26

**कविताएँ**

कुमार गंधर्व के पास एक गूँगे समय की माँग — सितांशु यशश्चन्द्र — 46

प्रेम रंजन अनिमेष की पाँच कविताएँ — 49

**केदारनाथ सिंह स्मृति कविता सम्मान-2**

एम. पी. प्रथीश (मलयाली) : वक्तव्य और कविताएँ — अनुवाद—ए. अरविंदाक्षन — 64

लवली गोस्वामी (हिन्दी) : वक्तव्य और कविताएँ — 67

**देवेन्द्र कुमार बंगाली स्मृति कविता सम्मान-2**

कवि अरुण देव : वक्तव्य और कविताएँ — 73

**शोध**

औपनिवेशिक पंजाब में हिंदी, आर्य समाज और सन्तराम बी.ए. की 'उषा' — सुजीत कुमार सिंह — 85

सरह की वाणी अमर होइ, दूध से उत्तम सुख में नहाइ — योगेश प्रताप शेखर — 97

कृषि आचार्य घाघ और भड्डरी की कहावतें एवं उनकी प्रासंगिकता — शीतल — 111

साहित्य बरअक्स सिनेमा : वैश्विक, भारतीय और
हिंदी साहित्य के संदर्भ में — अर्चना मिश्रा — 122
हरिशंकर परसाई के साहित्य की अन्तर्दृष्टि — कुमारी शुभ्रा — 128

**कहानी**

अमंडसन : एक प्रेम कथा—**एलिस मनरो** — अनुवाद—मधु सिंह — 131
नोस्टाल्जिया राधिका — वीरभद्र कार्कीढोली — 157

**परिसर से**

चाहत अन्वी की कविताएँ — 165
केतन यादव की कविताएँ — 171

**स्मरण : रमेश कुंतल मेघ**

सौन्दर्य मीमांसा के चितेरे का जाना — शशिभूषण द्विवेदी — 177

**विशेष पुस्तक :** नक्शानामा (कविता संग्रह)

नक्शानामा : एक नये नक्शे के इंतजार में (भूमिका) — सरफराज आलम — 186
सरफराज आलम की दो कविताएँ — 190

**समीक्षा**

सुंदर जागा स्वप्न से : संत से संत तक की यात्रा — मेधा — 192
(सुंदर के स्वप्न—दलपत राजपुरोहित)
लिखती हूँ मन : उलटती हूँ राख का ढेर — विहाग वैभव — 197
(लिखती हूँ मन—रोहिणी अग्रवाल)
हमारे जातीय अवचेतन में — अनामिका — 203
(नदी अविराम—अर्पण कुमार)
युक्ति मूलकता बनाम आस्था मूलकता — ध्रुब कुमार सिंह — 206
(आतम खबर संस्कृति, समाज और हम—दीपक कुमार)
उत्तर सत्यवाद क्या है? — सर्वेन्द्र विक्रम सिंह — 215
(उत्तर सत्यवाद—विवेक सिंह)
बहुपरतीय यथार्थ की औपन्यासिकता — नीरज खरे — 220
(अमर देसवा—प्रवीण कुमार)
अनाज नहीं दर्द और कराह उग रहे खेतों में — रामनाथ शिवेंद्र — 227
(माटी-राग—हरियश राय)
सामयिक विडंबनाओं पर तीखी नजर — संजय गौतम — 230
(पाखंडी भारतीय—रणविजय सिंह)

**सहयोगी** — 232

# सोने के पात्र से सत्य का मुँह ढका हुआ है

1

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।।

**ईशावास्योपनिषद ।। 15 ।।**

[ सत्य का मुख
सुवर्ण पात्र से ढका हुआ है

हे पोषक !
हे सर्वदर्शी कवि !
हे सविता !
सत्य के विधान की उपलब्धि के लिए
सत्य के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए
उस सुनहरे ढक्कन को अविलम्ब हटा दें
ताकि हम कर सकें
अनाविल सत्य से मुलाकात ।। ]

2

## खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है

वह महानायक खोलता है अपनी उच्छृंखलता में किसी दूसरे उपग्रह का
नक्शा और उसे किसी देश की तरह देखता है
मारक हथियारों के प्रयोग प्रदर्शन के लिए
आयोजित समारोह में
अचानक पृथ्वी के बारे में उसे चिन्ता हो उठती है

वह महानायक मदहोश महादेश का सर्वोच्च संचालक, हँसकर बताता है
एक मिनट में ढाई लाख गोलियाँ चलाने वाली बन्दूक के बारे में
जो कुछ वह शत्रुओं के विरुद्ध बताता जाता है
वह सब मनुष्यों के विरुद्ध होता चला जाता है
और सारी दुनिया के लोग संकट में पड़ जाते हैं भयानक

किसी राष्ट्राध्यक्ष का परवर्ती
वह दूरवर्ती लेकिन लक्ष्य में लिये जा चुके एक भौगोलिक
ऐतिहासिक और सांस्कृतिक देश की ओर से इस तरह बोलता है
जैसे जमीनी, आसमानी और समुद्री राष्ट्रीयताएँ उसकी अपनी सुविधाएँ हैं
जो दुविधाएँ हैं उनमें से एक यह कि हथियारों के साये में
मातृभूमि के साथ सम्बन्ध नैतिक कैसे रह सकते हैं?
हमने गुस्से को भी निशस्त्र नहीं रहने दिया—बातों से जो
बारूद नहीं सुलगती, वह मनपसन्द, शराब और आइसक्रीम न
मिलने से सुलग जाती है और मारा जाता है वेटर।
वह बोलता है जैसे बहुत कोई निकटवर्ती।
अत्यन्त गेय और पेय...

**लीलाधर जगूडी**

सत्य और असत्य की लड़ाई कोई नयी बात नहीं है। हमारे वैदिक ऋषियों ने जब कहा होगा 'असतो मा सद् गमय' तब भी यह संघर्ष मौजूद रहा होगा। इस संघर्ष के दौर में असत्य का पलड़ा भारी होने पर उपनिषदकार को कहना पड़ा 'सत्य का मुँह सोने के पात्र से ढका हुआ है'। इसलिए वह सर्वदर्शी कवि सविता से प्रार्थना करता है कि वे 'सत्य के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए/ उस सुनहरे ढक्कन को अविलम्ब हटा दें/ ताकि हम कर सकें/ अनाविल सत्य से मुलाकात'। जब कबीरदास ने अपनी सीधी सरल बानी में सच और झूठ को सीधे-सीधे पाप

और पुण्य के तराजू पर तौल दिया था, तब भी यह संघर्ष जारी रहा होगा। गाँधी ने अपने जीवन को ही सत्य की प्रयोगशाला बना दिया था और साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में सत्य को साधन के रूप में प्रयोग करने की हिमायत की। जिन दिनों गाँधी सत्य के प्रयोग में मुब्तिला थे उन्हीं दिनों विश्व राजनीति में झूठ का महाआख्यान चल रहा था। हिटलर और उसके सहयोगी गोयबल्स इसके सबसे बड़े किरदार थे। गोयबल्स ने तो झूठ को गर्व और आत्मविश्वास का विषय बना दिया था। इतिहास के एक ही दौर में सत्य और झूठ दोनों के प्रयोग चल रहे थे।

सच और झूठ का संघर्ष मानवता के इतिहास का शाश्वत सच है। झूठ के साथ अन्याय की स्वाभाविक संगति है। इसलिए जब कभी झूठ का पलड़ा भारी होता है, अन्याय को शक्ति का साथ मिल जाता है। अन्याय जिधर है उधर शक्ति। शक्ति को अन्याय की ओर देखकर युग के राम चकित हो जाते हैं। उन्हें नये सिरे से शक्ति की पूजा करनी पड़ती है और शक्ति की सिद्धि करनी पड़ती है। झूठ का हाहाकारी स्वरूप जार्ज आरवेल के उपन्यास '1984' के इंग्लैंड की याद दिला देता है। 'बिग ब्रदर तुम्हें देख रहा है' के पोस्टर याद आते हैं। याद आ जाता बिग ब्रदर का वह पोस्टर 1984 के इंग्लैंड की दीवारों पर चस्पाँ है—

युद्ध शांति है
स्वतंत्रता गुलामी है
अज्ञानता शक्ति है'।

अब आप कहते रहिए कि Knowledge is power लेकिन झूठ अज्ञानता में शक्ति की अवतारणा कर देता है। हरीश त्रिवेदी ने कभी कहा था Knowledge is power तो ठीक है लेकिन Miss knowledge कितना पावरफुल कितना शक्तिशाली है, कभी पाला पड़ा हो तो आप समझ रहे होंगे। सत्य और झूठ की लड़ाई में प्रायः झूठ सत्य पर सुनहरा पर्दा चढ़ा देता है। सत्य ओझल हुआ नहीं कि झूठ वेश बदल कर हाजिर।

जार्ज आरवेल '1984' उपन्यास के इंग्लैंड के बारे में लिखते हैं—'सत्यता का मंत्रालय जिसके अन्तर्गत समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और ललित कला आती थी। शांति का मन्त्रालय युद्ध से संबंधित था। प्रेम का मंत्रालय कानून और सुव्यवस्था देखता था और समृद्धि के मंत्रालय के ऊपर अर्थ व्यवस्था का दायित्व था''[1]। झूठ, अन्याय और शक्ति तीनों के मिल जाने से जो उलटबाँसी पैदा होती है उसमें सत्य, शांति और प्रेम का अर्थ ही उलट जाता है। सत्य असत्य में, शांति युद्ध में और प्रेम घृणा में रूपान्तरित हो जाते हैं।

अर्थों के उलट जाने से मनुष्य का सामान्य जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है। झूठ, फरेब, हिंसा, विद्वेष और कटुता का ऐसा वातावरण पैदा होता है जिसकी परिणति युद्धोन्माद और फिर युद्ध में होती है। द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद जितने भी युद्ध हुए हैं उनके मूल में झूठ, अन्याय और शक्ति की एकता की भूमिका रही है। चाहे अमेरिका—इराक युद्ध हो, रूस—यूक्रेन युद्ध हो या फिर इजरायल—फिलिस्तीन। इन सभी युद्धों की मूल वजह लोभ और अकूत सत्ता हासिल करने की मंशा रही है। सत्य की चादर ओढ़े असत्य ने इस तथ्य को छुपाने की कोशिश भर की है।